

ओ- पागल मनुआँ-दोड़ दे झूठी माया ॥२॥

उल्टे टंगे गर्भ में आकर  
नौ महिने तक भाई  
जब धरती पर पैर पड़े तो  
भूल गये कठनाई

ओ- पागल मनुआँ-----

जब लख चौरासी में भटके  
रो-रो विनती कीन्हा  
सुनी पुकार दयासागर ने  
तब मानुष तन दीन्हा

ओ पागल मनुआँ-----

यज्ञ-दान-तप-धर्म करूँगा  
ये कहकर तुम आये  
माया के बंधन में पड़कर  
जरा न तुम शर्माये

ओ- पागल मनुआँ-----

आई जवानी दौड़-दौड़कर  
माया बहुत कमाई  
निधन का धन रेंसा लूटा  
माया भी शमाई

ओ. पागल मनुआँ-----

रंग महल रेंसे बनवाये  
हुये लोग दीवाने.

कहें "श्री बाबा श्री" सुनो अय वन्दे  
क्यों बनते अंजाने

ओ. पागल मनुआँ-----

काम पड़े न ये काया ३३३-----